



स्व. १० भव नाथ मिश्र

"मैथिली शब्द प्रकाश" का परिचय

स्व. १० भव नाथ मिश्र, शुक्ल राजवंश के अन्तर्गत प्रसिद्ध व्यक्ति, ज्योतिष, व्यवसाय, भाषा, जामदग्न्य, आप्तवान एहि पञ्च एक ही युक्त वत्स खोस्म हरिअम्मे बालराजपुर मुलक मैथिल खोस्म ब्राह्मण राजाह । हिनक जन्म १८७६ ई० मे छाम - जमुधरि, पो० हटाह - मणौली, फंभारपुर, जिला - मधुबनी मे भेल छल । अपन माया महामहोपाध्याय कृष्ण सिंह लोकुरक शिष्यत्व मे व्याकरण-साहित्यक गम्भीर अध्ययन कर धर्मशास्त्र तथा कर्मकाण्ड मे खंडो निष्णात भेलाह । हिनक पिताक नाम प० रामोदर मिश्र तथा माताक नाम यमुना देवी छलन्हि । हिनका धर्मपत्नी आधा देवी से स्व. १० देव नाम मिश्र, व्याकरणाचार्य, वर्तमान प० श्री मैथिल नाथ मिश्र, साहित्याचार्य (स्वर्णपदक प्राप्त), प० श्री राज नाथ मिश्र, व्याकरण साहित्याचार्य तथा प० श्री पुण्य नाथ मिश्र आधुनिक-साहित्य-चारि पुत्र भेलथिन । रचित ग्रन्थ मे मात एकरा "मैथिली शब्द प्रकाश" नामक महाकोश अछि जे अपन प्रथम खण्डक प्रकाशन (ई० १९५४ / बनारस / मूल्य ६० आना) उपरान्त विश्व विद्याल विद्वान् लोकनि तथा जार्ज टियर्सन, बर्नेट, सुनोबि कुमार चटर्जी, सर गंगानाथ झा, कुमार गणेशनाथ सिंह मध्य प्रशिक्षित ओ चर्चित रहल छल । अन्य रचना मे विविध विषयक सकलन "विषयवाली" छल जे अनुपलब्ध अछि । फुटकर श्लोक भेटैत अछि । मैथिलीक्षर मे स्वहस्तलिखित सम्पूर्ण हरिवंश पुराण, दुर्गा सप्तशती तथा अनेक ग्रन्थक चिराय हस्तलेख देखीयेय अछि । १९३३ ई० क आग्रहण शुक्ल चतुर्थी तिथि केँ हिनक स्वर्गवास भेल गेल ।



प० श्री भव नाथ मिश्र "प्राप्त"

"मैथिली शब्द कल्पद्रुम" का परिचय

प्रस्तुत "मैथिली शब्द कल्पद्रुम" कोशक रचयिता संस्कृत तथा मैथिलीक महाकवि प० श्री मैथिल नाथ मिश्र "प्राप्त" साहस्य शास्त्राध्यायी वत्स खोस्म हरिअम्मे बालराजपुर मुलक मैथिल खोस्म ब्राह्मण प० भव नाथ मिश्रक कुलोन्मयक द्वितीय पुत्र थिकाह । हिनक माताक नाम आधा देवी छलन्हि । हिनक जन्म भारतीय शासन क्षेत्रक मिथिलाक मधुबनी जिलाखण्ड फंभारपुर ग्रामपंच के छाम - जमुधरि, पो० हटाह - मणौली मे १८७६-७७ ई० केँ भेल छल । भागलपुर के मुलतानगञ्जस्थ विज्ञानमोक्ष संस्कृत महाविद्यालय मे पढ़ि साहित्याचार्य परीक्षा मे बिहार मे उत्थन होखबाक कारणे स्वर्णपदक प्राप्त कएल । हिनक स्वर्णपदक प्रकाशित संस्कृत ग्रन्थ सभ मे - "धर्मविक्रमम्", पद्य महाकाव्य, "महर्षि विश्वामित्रम्", पद्य महाकाव्य, "कल्पद्रुम" कटक तथा पद्य राजाह काव्य "ब्रतु विभ्रमम्" एवम् "संस्कृत व्याकरणानुवाद बन्दोप" अछि । असंख्य अप्रकाशित पद्य अछि । मैथिली मे "हरिकवि" पद्य, "जय राज सलहस", पद्य महाकाव्य, संस्कृत समकाल मे "मेघदूत" क मैथिली अनुवाद तथा बहुत सभ अप्रकाशित मैथिली कविता अछि । प्रस्तुत पुस्तक समक्ष अछि । फेओ आह तथा पूर्ण नहि भऽ सकल अछि ई भूमि एकरा भूति पर ध्यान भडि देत मैथिल समाज एकर पुरक दोसर तकर पुस्तक सेहो कोशक निर्माण कर मैथिलीक घण्टार केँ भरैत रहथि मे लेखकक कामना छनि । ऐतद्वि वषः क्रम केँ पार कइयो केँ हिनक लेखनी लगातार चलिबडि गैत छनि ।

मैथिली-मैथिली शब्दकोश

मैथिली शब्द कल्पद्रुम

प० मति नाथ मिश्र 'मत्तंग'



નિમ્ન ગ્રંથ પ્રકાશન :- ૦૫

પ્રકાશન :

નિમ્ન ગ્રંથ પ્રકાશન

અમુચરિ, દુરાદ-કલોલી

પ્રસારણ, મધુવતી-૨૪૭ ૪૦૪

(C) નિમ્ન ગ્રંથ પ્રકાશન

પ્રથમ સંસ્કરણ—૧૯૬૫

પ્રિન્ટ —૧૯૭૦

સંગ્રહિત ગ્રંથ ૩૭૭- દાક્ષ
નિમ્ન ગ્રંથ પ્રકાશન, મધુવતી

નિમ્ન ગ્રંથ પ્રકાશન :

અમુચરિ સુભીક આનન્દ પ્રિન્ટર્સ

ગોસાલા રોડ, પો. બો. રમત

મુલકરપુર-૨૪૨ ૦૦૨

દુરભાષ-૨૪૭૨૩૩

મંત્ર
સીધું
યુક્ત
આદ્ય
પો. ૧
૩ અ
આદ્ય
મે રહ
ત્યા
દેવો
પર
પર
નાદ્ય
પુણ
પ્રથમ
કપર
સુભી
પ્રથો
મંત્ર
પેટે
દુર્ગા
૧૯૬
અય ગેલ

[illegible]

१. संविधान का अर्थ है - एक देश के नागरिकों के बीच बंधनकारी नियमों का संग्रह।
 २. संविधान का अर्थ है - एक देश के नागरिकों के बीच बंधनकारी नियमों का संग्रह।
 ३. संविधान का अर्थ है - एक देश के नागरिकों के बीच बंधनकारी नियमों का संग्रह।
 ४. संविधान का अर्थ है - एक देश के नागरिकों के बीच बंधनकारी नियमों का संग्रह।
 ५. संविधान का अर्थ है - एक देश के नागरिकों के बीच बंधनकारी नियमों का संग्रह।
 ६. संविधान का अर्थ है - एक देश के नागरिकों के बीच बंधनकारी नियमों का संग्रह।
 ७. संविधान का अर्थ है - एक देश के नागरिकों के बीच बंधनकारी नियमों का संग्रह।
 ८. संविधान का अर्थ है - एक देश के नागरिकों के बीच बंधनकारी नियमों का संग्रह।
 ९. संविधान का अर्थ है - एक देश के नागरिकों के बीच बंधनकारी नियमों का संग्रह।
 १०. संविधान का अर्थ है - एक देश के नागरिकों के बीच बंधनकारी नियमों का संग्रह।

[illegible]

गंगा: जल संचयन के माध्यम से पानी को सुरक्षित रखना और इसे उपयोग के लिए उपलब्ध रखना।
जल संचयन का मतलब है जल को जहाँ से भी संभव हो सके उसी मात्रा में इकट्ठा करना।
जल संचयन के माध्यम से जल को सुरक्षित रखना और इसे उपयोग के लिए उपलब्ध रखना।
जल संचयन का मतलब है जल को जहाँ से भी संभव हो सके उसी मात्रा में इकट्ठा करना।
जल संचयन के माध्यम से जल को सुरक्षित रखना और इसे उपयोग के लिए उपलब्ध रखना।
जल संचयन का मतलब है जल को जहाँ से भी संभव हो सके उसी मात्रा में इकट्ठा करना।
जल संचयन के माध्यम से जल को सुरक्षित रखना और इसे उपयोग के लिए उपलब्ध रखना।
जल संचयन का मतलब है जल को जहाँ से भी संभव हो सके उसी मात्रा में इकट्ठा करना।

[illegible][illegible]

नाम तुम्हें विदित होना चाहिये, कि मैंने जो बातें लिखी हैं, वे सब सच हैं, मैंने किसी भी
 प्रकार का झूठ नहीं लिखा, मैंने जो बातें लिखी हैं, वे सब सच हैं, मैंने किसी भी
 प्रकार का झूठ नहीं लिखा, मैंने जो बातें लिखी हैं, वे सब सच हैं, मैंने किसी भी

भाग एक अध्याय प्रथम पृष्ठ ५५

ਸਮੁੱਚੇ ਪੰਜਾਬ ਵਿਖੇ ਸ਼ਾਂਤੀ ਅਤੇ ਸੁਰੱਖਿਆ ਬਣਾਈ ਰੱਖਣ ਲਈ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਕਾਨੂੰਨੀ ਅਤੇ ਸੁਰੱਖਿਆ ਮਾਮਲਿਆਂ ਨੂੰ ਸਖ਼ਤੀ ਨਾਲ ਸੰਭਾਲਿਆ ਹੈ।

[illegible]



FRUITFUL MUSE

THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE



118 M 5 1

14.vii.25.

14.vii.25.

Sir,

I beg to acknowledge the receipt
of your letter of the 14th ult., for
which I am, most obliged to you.
It is a great pleasure to me
that you should have received the
information of the 14th ult., and
that you should have seen it.
I am, Sir, very respectfully,
Yours, Sir, very respectfully,
Yours, Sir, very respectfully,

Yours, Sir, very respectfully,

Yours, Sir, very respectfully,

Yours, Sir, very respectfully,
Yours, Sir, very respectfully,

1871

1872

1873

1874

1875

1876

January 17

Monday

17

17

17

17

17

17

17

17

17

9.2

SENATE HOUSE
R. ANABAD A. W. C. P.

T. H. C. F. A. T. P. P. C. C.

1. 15

६

कुमार गंगाधर सिंह

६

१९५३

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

४०

४१

४२

४३

४४

४५

४६

४७

४८

४९

५०

१९५३

१९५३

१९५३

१९५३

१९५३

१९५३

१९५३

१९५३

१९५३

१९५३

१९५३

१९५३

१९५३

१९५३

मिथिला शब्द प्रकाश

-स्व० प० भव नाथ मिश्र

[illegible]

[illegible]

वि. सं. क्र. सं. सं.	वि. सं. क्र. सं. सं.	वि. सं. क्र. सं. सं.	वि. सं. क्र. सं. सं.	वि. सं. क्र. सं. सं.
१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५
१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५
२६	२७	२८	२९	३०
३१	३२	३३	३४	३५
३६	३७	३८	३९	४०
४१	४२	४३	४४	४५
४६	४७	४८	४९	५०
५१	५२	५३	५४	५५
५६	५७	५८	५९	६०
६१	६२	६३	६४	६५
६६	६७	६८	६९	७०
७१	७२	७३	७४	७५
७६	७७	७८	७९	८०
८१	८२	८३	८४	८५
८६	८७	८८	८९	९०
९१	९२	९३	९४	९५
९६	९७	९८	९९	१००

[illegible]

मिनायना शब्द प्रकाश

क्र.सं.	विवरण	प्रमाण	दिनांक	अर्थ
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०

[illegible]

वि. क्रमांक	वि. क्रमांक	वि. क्रमांक	वि. क्रमांक	वि. क्रमांक
१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५
१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५
२६	२७	२८	२९	३०
३१	३२	३३	३४	३५
३६	३७	३८	३९	४०
४१	४२	४३	४४	४५
४६	४७	४८	४९	५०
५१	५२	५३	५४	५५
५६	५७	५८	५९	६०
६१	६२	६३	६४	६५
६६	६७	६८	६९	७०
७१	७२	७३	७४	७५
७६	७७	७८	७९	८०
८१	८२	८३	८४	८५
८६	८७	८८	८९	९०
९१	९२	९३	९४	९५
९६	९७	९८	९९	१००

क्र.सं.	विवरण	प्रमाण	प्रमाण	प्रमाण
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०

क्र. सं. व. सं.	दिनांक	विवरण	पृ. सं.	प्रमाण
१. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	१	प्रमाण
२. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	२	प्रमाण
३. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	३	प्रमाण
४. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	४	प्रमाण
५. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	५	प्रमाण
६. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	६	प्रमाण
७. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	७	प्रमाण
८. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	८	प्रमाण
९. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	९	प्रमाण
१०. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	१०	प्रमाण
११. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	११	प्रमाण
१२. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	१२	प्रमाण
१३. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	१३	प्रमाण
१४. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	१४	प्रमाण
१५. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	१५	प्रमाण
१६. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	१६	प्रमाण
१७. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	१७	प्रमाण
१८. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	१८	प्रमाण
१९. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	१९	प्रमाण
२०. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	२०	प्रमाण
२१. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	२१	प्रमाण
२२. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	२२	प्रमाण
२३. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	२३	प्रमाण
२४. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	२४	प्रमाण
२५. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	२५	प्रमाण
२६. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	२६	प्रमाण
२७. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	२७	प्रमाण
२८. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	२८	प्रमाण
२९. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	२९	प्रमाण
३०. प्रारंभ	२०००	प्रारंभ	३०	प्रमाण

क्र.सं.	विवरण	प्रमाण	दि.सं.	प्रमाण
१	अ.सं. १०००	१०००	१	अ.सं. १०००
२	अ.सं. १०००	१०००	२	अ.सं. १०००
३	अ.सं. १०००	१०००	३	अ.सं. १०००
४	अ.सं. १०००	१०००	४	अ.सं. १०००
५	अ.सं. १०००	१०००	५	अ.सं. १०००
६	अ.सं. १०००	१०००	६	अ.सं. १०००
७	अ.सं. १०००	१०००	७	अ.सं. १०००
८	अ.सं. १०००	१०००	८	अ.सं. १०००
९	अ.सं. १०००	१०००	९	अ.सं. १०००
१०	अ.सं. १०००	१०००	१०	अ.सं. १०००
११	अ.सं. १०००	१०००	११	अ.सं. १०००
१२	अ.सं. १०००	१०००	१२	अ.सं. १०००
१३	अ.सं. १०००	१०००	१३	अ.सं. १०००
१४	अ.सं. १०००	१०००	१४	अ.सं. १०००
१५	अ.सं. १०००	१०००	१५	अ.सं. १०००
१६	अ.सं. १०००	१०००	१६	अ.सं. १०००
१७	अ.सं. १०००	१०००	१७	अ.सं. १०००
१८	अ.सं. १०००	१०००	१८	अ.सं. १०००
१९	अ.सं. १०००	१०००	१९	अ.सं. १०००
२०	अ.सं. १०००	१०००	२०	अ.सं. १०००
२१	अ.सं. १०००	१०००	२१	अ.सं. १०००
२२	अ.सं. १०००	१०००	२२	अ.सं. १०००
२३	अ.सं. १०००	१०००	२३	अ.सं. १०००
२४	अ.सं. १०००	१०००	२४	अ.सं. १०००
२५	अ.सं. १०००	१०००	२५	अ.सं. १०००
२६	अ.सं. १०००	१०००	२६	अ.सं. १०००
२७	अ.सं. १०००	१०००	२७	अ.सं. १०००
२८	अ.सं. १०००	१०००	२८	अ.सं. १०००
२९	अ.सं. १०००	१०००	२९	अ.सं. १०००
३०	अ.सं. १०००	१०००	३०	अ.सं. १०००
३१	अ.सं. १०००	१०००	३१	अ.सं. १०००

[illegible]

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100

क्र.सं.	नाम	पद	वर्ग	वर्ग
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

शब्द	हि. शी.	सं.	सं.	अर्थ
एकी	एकी	एकी	१	एकैक
एकी	एकी	एकी	२	एकैक
एकी	एकी	एकी	३	एकैक
एकी	एकी	एकी	४	एकैक
एकी	एकी	एकी	५	एकैक
एकी	एकी	एकी	६	एकैक
एकी	एकी	एकी	७	एकैक
एकी	एकी	एकी	८	एकैक
एकी	एकी	एकी	९	एकैक
एकी	एकी	एकी	१०	एकैक
एकी	एकी	एकी	११	एकैक
एकी	एकी	एकी	१२	एकैक
एकी	एकी	एकी	१३	एकैक
एकी	एकी	एकी	१४	एकैक
एकी	एकी	एकी	१५	एकैक
एकी	एकी	एकी	१६	एकैक
एकी	एकी	एकी	१७	एकैक
एकी	एकी	एकी	१८	एकैक
एकी	एकी	एकी	१९	एकैक
एकी	एकी	एकी	२०	एकैक

[illegible]

मैथिली शब्द कल्पद्रुम

मति नाथ मिश्र 'मतन'

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

ਸਾਖੀਆਂ ਨੂੰ ਸ਼ਾਂਤੀ ਦੇਣ ਲਈ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਕਾਨੂੰਨੀ ਕਾਰਵਾਈ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਹੈ।

अधोपनिषत्, यत्न बद्ध होगा । अथ निम्नलिखित अंशों का अर्थ होगा ।

अथोक्तं चैव तद्वक्तुं अत्यन्तं हीनं स्थितिं होतुम् ।

अष्टावक्र २० अथर्ववेद प्रमाणम् । ३

२. एकसक गणनी ३. हरी प्रोत्साहक एक मासि समीक्षा

रतु बाहि वस्तुंक शक्तिरा । कल्पम मनोमग्न । वै

बाल के कवि दीनानाथ	३
आर्य समाज की स्थापना	४

अपनी शक्ति का प्रयोग करके अपने शत्रुओं को पराजित करने में सफल हो गई।

निर्देश :-

मैंने ईश + श्रवणना करवा ।

प्रतिपक्ष विना कथारहित अवधि..... ५

सौ विभागाध्यक्ष ()

৬৭৬	৮১	১৪৪৮
৬৭৭	৮১	১৪৪৯

अभिलेख-२३ शशिकांत शिंदे वरुणिकांत शिंदे यांना

अविवाह लगान = व सारंग बनन न सनन

4. दूध हल में एक जार में डालें।

अन्तरा = अन्तराष्ट्रियक पद । संशोधन के

कर्मि

अभ्यास-२	अभ्यास-३	अभ्यास-४	अभ्यास-५
अभ्यास-६	अभ्यास-७	अभ्यास-८	अभ्यास-९

कन्दो-से, बौद्ध का ५५ में इनका नाम गान्धर्व
विशेष साधक

अभिषेक-विधि, अन्त में अभिषेक न १० =

কিছা	৫
কিছা	৫

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मन्त्रान्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कन्यादी.दिने, समाजक हानिहुन कर्तव्य ।

अन्तर-। पुरातन पर सहायक विभाग ।
अभ्युक्त विधि पर आदिक सहायक विभाग ।

अन्तर्जातीय- (प्राथमिक) अब दृष्टि के योग्य

1940年12月1日

आवृत्ति/वर्ष	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
आवृत्ति/वर्ष	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

[illegible]

१. **प्रस्तावना** - यह पुस्तक हिन्दी भाषा में लिखी गई है।
 २. **उद्देश्य** - इस पुस्तक का उद्देश्य है कि हिन्दी भाषा में लिखी गई पुस्तकें पढ़कर हिन्दी भाषा में लिखने में सक्षम हो सकें।
 ३. **विषय** - इस पुस्तक में हिन्दी भाषा में लिखने के विषय में विचार-विमर्श किया गया है।
 ४. **लेखक** - इस पुस्तक के लेखक हैं -
 ५. **प्रकाशक** - इस पुस्तक का प्रकाशक है -
 ६. **प्रथम आवृत्ति** - इस पुस्तक की प्रथम आवृत्ति -
 ७. **मूल्य** - इस पुस्तक का मूल्य -
 ८. **पता** - इस पुस्तक का पता -
 ९. **संस्करण** - इस पुस्तक का संस्करण -
 १०. **नोट** - इस पुस्तक में कुछ त्रुटियाँ हो सकती हैं।

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

श्री-वज्रय संस्कृत क 'अवि' शब्दक अर्थ होनेक ।
 वज्रो-श्री नाम के आशुको वा सोने बरत अछि ।

मोटरी-नं., बाणक एक क्रम । नं.- मोटरी : ३
 मोटरी-नं., मोटरी वस्तु हैं मोटरी हैं मोटरी वस्तु
 मोटरी वस्तु हैं ।

भौकर-वर्ष, वरुण विरिष्णु वसुध काल-
काल ।

मोकरा-वर्ग, वरोज विधिद्वय समुदाय वर्गोद्धारक
रूप ।

श्रीमदरवि, श्रीमदरवि श्रीमदरवि श्रीमदरवि श्रीमदरवि

प्रोफेसर., समिक कादम नै वनन दोन आ काम
आइ सचौ पायन बरहि मे सभागत मुहूर्त भानि नै
कः रि. गङ्गा-मे. गङ्गा-मे. ।

श्रीकाव्य-श्री, श्रवणा, वैभवा । श्रीकाव्य । त्र, तद्वत्
श्रीकाव्य-श्री, श्रवणा वैभवा । श्रीकाव्य । त्र, तद्वत्

मौलाना-जी, कोय कोय कमला हर सुहरासुन
२-५५ ५

श्री गणेशाय नमः । श्री गणेशाय नमः ।
 श्री गणेशाय नमः । श्री गणेशाय नमः ।
 श्री गणेशाय नमः । श्री गणेशाय नमः ।

श्रीकृष्ण-विरोध, ब्रह्मचर्यादौ एव तान्त्रिक शास्त्रकारः ।

गिरफ्तार-वि. संरक्षण करार । गिरफ्तार करार के प्रति
गिरफ्तार-वि. संरक्षण करार । गिरफ्तार करार के प्रति

[illegible]

प्रमाणित है कि आवश्यकता है अधिक प्रोबत ५ ५

बोधराष्ट्र-^{६६} भूमि पर एतद्वय सम्पूर्ण शरीर से

मोक्षराज्य-में कि कोतो वस्तु के मोक्षक बना-

गोपबन्धन आरम्भ-दि. सोम वर सोम वर भूषण वर

1210 1

श्रीगणेश नमः तस्मात् ते रहस्यं निजैकं पूर्वापातं ते

मोदी जी, निम्न क प्रश्न प्रश्ना, धर्मि जी भवक
-निमित्तानुसंग भवक ॥

मोहक-सिद्धि का यह प्रमाण है कि सत्यमेव जयते
मोहक-सिद्धि का यह प्रमाण है कि सत्यमेव जयते

[illegible]

ਸੰਗਤਭਾ. ੨੨ ੨੭੪ ੨੭੫ ੨੭੬

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

जीकार बोझार-सं॥ बिना स्वार्थे तेन ह्यष्टमः सः
अन्योऽपि वेत्तापि विदुः ॥१॥ ॥१॥ ॥

लोडर-कि, तेल की ब्रश्टक से दोहरा बर्तन
कलश ।

बात में तब्रि दूमाहिरा । अधय ।

ਸੰਸਦੀ ਸ਼ਕਤੀ

मोक्षभोग-सं., मूलकं ह्यु विमर्शक वस्तु ।

पुनः स्वभावात्मा । ३

मोक्ष-सं अनुदात्ता, सुख्यता, कन्दुमी । प्रयोगः ।

मोक्षमार्ग, मोक्ष, मुदरा, सांगीत, वाद्य ।
 ३. १२३

जीवकी-विसे- तनावी, कोस मरक, तेजावी
सं अनाम

लोकाव-विशेषः १. लोकावः, दृष्टि विस्तृतं नै महार ।

१. अथर्व, अथर्वशास्त्र १

अध्यापक-विशेष, [] आर्य समाधिवासा आ समाचार

जाने करवाना मुनीं आ आदि ।

[illegible]

कलश-विधौ, हाई पाईफ वा गैसो लुह कादक
बिन्दार नै राखि कादक हेतु मानुर बिन्दायी । ऐ
कासा-रं, धुत्तक नीचै उवाक मोव, बढा ।
हि.) है

कतवा मोरच-कि., उपर भीषां राजक राती के
मोरेक मुक स्थान के अलग करव ।

काठमाडौं-विश्वे, (आशुषिख) महाराष्ट्र कम मन्त्रालय
कर्मचारीको सम्पत्ति बर्धन ।

कालमुक्त-सं. (मासपत्रिका) दान करने में सक्षम ।

कायुक्त-मित्रों, साथ ही पहिले का पासून । श्री,

काठमाडौं-२२, आदिवासी, शैव, धर्मगुरु ।

कल-सं. यन्त्र । वि.

कल-श्री, शुभ, भाग्य, वलादिक, मोक्ष, मुक्ति ।
अथर्व । ३

● लक्ष्मी-विष्णोः, यद्वरं ददाति ।

कलकत्ता कलकत्ता-६। १. लाल कोमी शम्भु शाह
लाल शाहवादी श्रेष्ठ। भूषण शर्मा शाह शम्भु शाह
श्रेष्ठ। २. शम्भु शाह शम्भु शाह शम्भु शाह।

अथवा एव-इति . आरुणाच हेतु . अथवा हेतु . वि .

कमलसिंह-वं., त्रौहटि (चमरमे) में कृषिजीवा लं
उत्पत्ति लवण बांधो ।

कलाकारी-सु. नृपति द्वारे जीवमक साधुपदा ५ मे

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । विष्णुसत्त्वम् ॥ १ ॥

काली-सं. पुस्तक उद्योग संस्थान ।

कर्मसंघात-विशेषः, किञ्च अकारं अकारकं नित्यविषयः
नित्यः किञ्च ।

कालचक्र-हि., भारी शक्ति से कष्ट सुखवैक मेल
वाचित करके ।

कर्मसुखन-वि०, विषयाय अर्थात् ज्ञानाय श्रमादिना
प्राप्तमर्थं वा ।

कलकत्ता-१६, भारी बस्तुक अनुविगत इति ज्ञपते भूमि
उपगत ।

कल लीडर-शि, (सामाजिक दृष्टि द्वारा) ओरि कल
ह ओरि कल ।

पुनः प्रोत्साहितः, धर्ममार्गं गतः च दाम्पत्यं विभक्तम्

कण्डव-वि., १. काही बालुक एकविध वनवि
वाण । २. काही बालु के एक वा.मल के दोमर
वा.मल से बनत ।

कल्याण-वि., १. एक वाक्य में दोनार अंगत में
अधिकांश । २. बाही वस्तु में धार लाईने सम।
एव ।

कल्याण-४, संगीत एवं वाद्य विभाग, पृष्ठ १

ལྷོ་ཁ་པཱེ་མེ

कल्पवृक्ष-सी, पीडा देनिहार प्रति जाति । शान्तिनिक
 ५५० क प्रभाव । ५५० क प्रभाव ।

अथर्वनाम-सं. बड़ीकूटी विशेषः । ३

कल्पवृक्ष जि दुखी होतक । दुखदायी घर भाङ्गोल
क र मं

[illegible]

काभ्याह-४॥, र्वरु आनि विसेक १ ॥ ॥

कनक-शुं मेकनी सिखेंस गोपबान्ना कानन । वै

कमल-विभो, बीज से उत्पन्न वात से विभक्त
मध्यम शरीर से ओदिकक बनाओल विभक्त वात ।

बालक साठी-२, १. कलम बसईक पोष्य खाँट ।

५. ज्ञानक प्रभव । ६

सत्यमेव जयते ॥ १ ॥

कल्पवृक्ष-सर्वं संतुष्टयन् सर्वं शान्तयन् गच्छति । ॥

कल्पश्री-विश्वे वोषु हविर्वाजा वासुका यजः । वि

कनकद्वी. विज्ञे., कागजकन मुद्राभावा । कृष्ण
श्री. ० कनकद्वी ।

कर्मवर्धन-सिद्धि. अनुकूल धर्मिण्यसिद्धि आगच्छ । मे

कलकत्ता-२१, जहाँ रुचक पहुँच होनी । मेधाक
विवेक ।

कभर साहीब, बहागीक हारे कोनी बस्तुक हेतु सब
सोक से भिगयी के सागर सका तबक शिबि का
बालुबन ।

कालराज्य विषये क-नर क-र क-रिदा-र । क-रि । क-र-
र-रि ।

कनका कानका की, कोनो कुन कनका कनका पर
कनका कनका ।

સમજાવ-શ્રી. શામલ શાંદિ ચાલક અધિવા મુદ્દી । ૩૧

कालावधः विवेकः, उपरि उक्तं वामद्वयं चालीं नक्षत्रं.
दशमं दृष्टं पुण्यं लोकः । सं

[illegible]

कहानियाँ-विश्व, रोनी, वडईवाक्य, अविश्व । १
कहानी-अवयव । २ कथक (उपन्यासक) । ३ कथा-
कारक शब्द । प्रयोग-... की तो भोले कहो वन कलह
भोला के नै देखतहुन । हुन कह्यो देखविदेव । ४
कहाउनि-व. शिरावमन्त्रक निम्नव शिष्टिदत्त महा
पञ्चक शिष्टि । ५
कहाकही-म. ६ शिरमयात्मक बातचीत । ७
८. कथाकार कथ के कथोप कथन । ९
कहात-मं., दुविधा, अन्धकार अन्धकार । १०
कहाली-मं., अन्धकार हीरे उपस्थित लफट । ११
कहाबनि-अन्धकार, वाक्य पुरक परोक्षवर्ती अनिश्चित
शेषक । प्रयोग-... कहाउनि ओ वन काव्य कथा ।
कहाउनि बारि मे बहुत थोक मुठई, १२
कहाउनि-कथन, कथा, वडई, कलं दूर । १३
कहा कथाएक-क. सम्भाव कथाएक । १४
कथाबो-मं., निम्नकारक शेषक अवस्था
धर्मका, वन । १५
कथा विवे. वेडू-... कहाविका १६
कहाली-मं., रोनी वडईवाक्य कथ काव्य अविश्व । १७
कहाली-विश्व, रोनी, दुविधा । १८
कहावुनी-मं., कथक कथन । प्रयोग-... कहि ओ
कथक कथन काव्य । १९
कथ-अवयव, कथक कथन । प्रयोग-... कहि ओ
कथक कथन । २०
कथ-अवयव कथक कथन, कथक कथन । २१
कथक-अवयव, कथो अनिश्चित समय के । २२
कथक-मं., कथक कथन । २३
कथोवा-विश्व, कथोवा, कथोवा कथो कथक
कथक । २४
कथोवा-विश्व, कथोवा कथो कथक कथक । २५
कथोवा-मं., कथक कथन, कथक कथन । २६
कथोवा-विश्व, कथोवा कथो कथक कथक । २७
कथोवा-मं., कथक कथन, कथक कथन । २८
कथोवा-विश्व, कथोवा कथो कथक कथक । २९
कथोवा-मं., कथक कथन, कथक कथन । ३०

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

परीक्षा कायदा-६०, अर्थात् प्रश्नपत्र, स्वयं भरणे
कर्मक संप्रदाय का अर्थ है ।

[illegible]

कोड़ा-खं, लपते जात थे सिपने हुए वन के घोवन ।
 थे

कवि-कर्म १. कुल वंश धारिण ।
 २. लक्ष्यक, कर्मोक्त कर्म कर्म-कर्मना कर्म
 ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९.

संविदा-विषये, द. कोहि रोमक शार्त अलमर्क ।

कोविन्द-विश्वः, (नारायण) कोविन्द कृष्ण वरुण
महर्षिपति रत्नवर्मा ।

कोई-सा-सू, बानि से बड़बाना छोट करे । मे.
कोही-सू, एकक करी । मे.

कोल-म., विभिन्न विभाग विभागनामा विह्व ।
मन्त्रालय मन्त्रालय मन्त्रालय । क. मन्त्रालय

॥ अथ श्रीमद्भगवत्पूजाविधिः ॥

कोलकाता-४ में ग. म. प. ड. द्वारा २४ अ. १०.५० से
कोलकाता-५ में भू-वैज्ञानिक परीक्षा विविध प्रकार की है।

कोलकाता/कोलकाता-२, सर्वे शास्त्रिक विद्या : ३

कोमादी-ई. अमलदास, अनाथ आश्रम का संस्थापक

स्वच्छतादः ।

अथमर्थं ज्ञान ।

२१४ अथ न प्रसिद्धं यथा

४१६. यं ह्यस्य तावत्क वनस्यः ॥ ४१७ ॥ अथवा न व
 नोक्तं त्वं न व न व प्रविष्टः । ४१८

ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਸ੍ਰੋਤ ਸੰਬੰਧੀ ਸਾਰੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨ-ਉਤਰਾਂ ਦੇ ਜਵਾਬਾਂ ਦੇ ਸਮੂਹ ਨੂੰ 'ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਸ੍ਰੋਤ' ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਸਮੂਹ ਦੇ ਅੰਤਰ ਵਿੱਚ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਸ੍ਰੋਤਾਂ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਵਾਂ ਦਾ ਵੇਰਵਾ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਸਮੂਹ ਦੇ ਅੰਤਰ ਵਿੱਚ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਸ੍ਰੋਤਾਂ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਵਾਂ ਦਾ ਵੇਰਵਾ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

[illegible]

ब-होमं च ह्यं ददति इत्यस्य पथः ।

५

कोवारी-में, मोहक घोट बहराव बनल बाबत
मुनि कोईबाबा बतल ।

कविः यः स कविः सत्यं वदति स कविः स कविः स कविः

के ३ अनेक से हयी ।

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

कोशिका ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

कोलकाता-सं. अंक १२६६ वरपर कोलकाता जिल्ला

कांनरबोर्ड ११ एक ध्वज हने न छै पदवी हाना

कौस्तुभ-सं, ६ विभिन्न विधाओं पर एक कोट से सुगुण

कोरुटी-विज्ञे, कोरुटी-विज्ञे ।

[illegible]

कविता-संग्रह, कोन प्रकाशने ।

कानाका न ५ १५ कानि म समि १ न ५ १

कर्मचारी	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००
कर्मचारी	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००

कालाग्र्येऽपि तत्रैव कालाग्र्येऽपि तत्रैव कालाग्र्येऽपि तत्रैव

प्रकार का है

कक्षा 10 (अ. 10) पृष्ठ 10

१८१ प्रमाण व फ व म न व व व व व
निर्माण व व व व व व व व व

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

क्रमांक: ४८७३ दिनांक: १६/११/८२ अ. २४२

सुखा-यं, धान रोषेक काय वीयाक मोटी सीमि
रोषेक सुविद्या मेम अपन बाहु छोटव विचाराक
पुष्टी ।

कट-यं, बसक ईशिक कटो (साधन) जगति
; १५६० ई. इतरक बसक वलन ।

म-य, कपडा का मन्म पसरवामा बन्नुक कोन-
बाला जल (कपडा) ।

कटो-यं, कपडा बटवज्जक काय के लवैयाला
इमान के लवैयाला मोह का काहक बाहर छोट
कर ।

मुट्टे-मन्मथ, मन्म के बाटि कय बदला के मन्म
विह्वल । प्रयोग-“बाहरक बाटि मुट्टे मन्म छोटकी
मात्र विह्वल करि ।”

कृष्ण-यं, १. इत्यादि २. कोकिल । ३. रामक
मृग कृष्णक-यं, १. अधिकांश ई. भारत इत्यादि ।
२. धर्म के लिये समर्पित ।

कृष्ण-यं, इत्यादि मृग वलन ।

कृष्ण-यं, कोटि कय सुमिक बाहर ई कोनो मन्म
बाहर करक । बाटि कोटि ।

कृष्ण-यं, कृष्ण कर्षणका मृग ई मन्म ।

कृष्ण-यं, कृष्ण, वीर, कृष्ण, विह्वल का
अधिक ।

कृष्ण-यं, विह्वलता कोन्दव ।

कृष्ण-यं, कोनो वस्तुक कोन कर्षणका मन्म ।

कृष्ण-यं, (स्वीकारात्मक) वेद, वीर, अधिक ।

कृष्ण-यं, बाय जल का मन्मक रीर ।

कृष्ण-यं, कृष्णका मन्म ।

कृष्ण-यं, कृष्णक विह्वल काय कोन
ई बहिने मन्मक कृष्णक प्रकट होएव ।

पृष्ठ

कृष्ण-यं, कृष्ण ई ईश्वरी मन्मका मन्म ।
म-य, मन्म

कृष्ण

कृष्ण-यं, १. कृष्णक । २. बाहरकी कृष्ण-
कय मन्मकोन । कृष्ण-यं, ३. कृष्णक कय
पुष्टी ।

कृष्ण-यं, १. कोन कय । २. विह्वल
कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक, कृष्णक, कोन कय
प्रयोग-“ई कृष्ण के कृष्ण के कृष्णक कय ।”
कृष्ण-यं, कृष्णक कय विह्वल कृष्णक ।
कृष्ण-यं, कृष्णक कय विह्वल ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

कृष्ण-यं, कृष्णक कय कृष्णक कय ।

[illegible][illegible]

कोशाएव-कि. केसु—(कोशाएव) ।
 कोशाकोमी-नं., वारम्बार कोनेक मां उन्हेक कम ।
 कोसी-नं., बापक अनुसार ठोस असाबोस बाबरन ।
 कोसल-नं., कोर्सेक बगल । बीतरकरि पैसा का
 मुशिल करीक स्थान ।
 कोसल-कि., बीतर करि पहुँचा कमे असाबी सुर-
 शिल करक ।
 कोसर-विजे., असाबी पर असाबिबल रहनिहार । मन
 से बचन रहनिहार बूढ ।
 कोस-नं., दुहा, कोसि, सुरब ।
 कोस-कि., कोकि कस बीतर बूढ करक या पैसक
 कोस-नं., कोह उर्दा भूख केर
 कोहि कोहि कस बूढ-कि., देखिते बिबदि उठक ।

कोरी

की-अन्तर, अन्तराव शब्दक स्वतः अन्तराल
 नाम (१) ।
 कोसल-विजे., केसल असाबिबल असाबिबल ।
 कोशाकोमी-विजे., वारम्बार कोनेक मां उन्हेक कम ।
 कोसल-विजे., असाबी पर असाबिबल रहनिहार । मन
 से बचन रहनिहार बूढ ।
 कोस-नं., दुहा, कोसि, सुरब ।
 कोस-कि., कोकि कस बीतर बूढ करक या पैसक
 कोस-नं., कोह उर्दा भूख केर
 कोहि कोहि कस बूढ-कि., देखिते बिबदि उठक ।
 कोसल-विजे., असाबी पर असाबिबल रहनिहार । मन
 से बचन रहनिहार बूढ ।
 कोस-नं., दुहा, कोसि, सुरब ।
 कोस-कि., कोकि कस बीतर बूढ करक या पैसक
 कोस-नं., कोह उर्दा भूख केर
 कोहि कोहि कस बूढ-कि., देखिते बिबदि उठक ।

कोर-नं., कोर, मरकाबोयक मरु केत उर्दक बिल ।
 कोर-विजे., असाबी पर असाबिबल रहनिहार । मन
 से बचन रहनिहार बूढ ।
 कोसल-विजे., असाबी पर असाबिबल रहनिहार । मन
 से बचन रहनिहार बूढ ।
 कोस-नं., दुहा, कोसि, सुरब ।
 कोस-कि., कोकि कस बीतर बूढ करक या पैसक
 कोस-नं., कोह उर्दा भूख केर
 कोहि कोहि कस बूढ-कि., देखिते बिबदि उठक ।

को

को-नं., कोर, मरकाबोयक मरु केत उर्दक बिल ।
 को-विजे., असाबी पर असाबिबल रहनिहार । मन
 से बचन रहनिहार बूढ ।
 कोसल-विजे., असाबी पर असाबिबल रहनिहार । मन
 से बचन रहनिहार बूढ ।
 कोस-नं., दुहा, कोसि, सुरब ।
 कोस-कि., कोकि कस बीतर बूढ करक या पैसक
 कोस-नं., कोह उर्दा भूख केर
 कोहि कोहि कस बूढ-कि., देखिते बिबदि उठक ।
 कोसल-विजे., असाबी पर असाबिबल रहनिहार । मन
 से बचन रहनिहार बूढ ।
 कोस-नं., दुहा, कोसि, सुरब ।
 कोस-कि., कोकि कस बीतर बूढ करक या पैसक
 कोस-नं., कोह उर्दा भूख केर
 कोहि कोहि कस बूढ-कि., देखिते बिबदि उठक ।

सूत्र-०१. शक्ति नै ज्ञानम अकारकं ह्यस्य ।	५
सूत्र-०२. समानकं नैव (सम्यक्) ।	६
सूत्र-०३. मृतं नैव एकं धर्मं तस्यैव गतिरुच्यते ।	७

4

[illegible]

३१

[illegible]

मोड-अ	बनौट मकसद मीरहू ।	ब
मोडकट-विज.	१. बोरा कब बीज्याक मोट कटीबाना	ब
मोडिनाम	२. (माधमिड) अमुकिल नाम बी	ब
मोना इमेडा	।	ब
मोड मोइबा-अ.	कानो बिलेप किया हे बरक मरुप	ब
मो वधुक मरुपक मोइबा मोट ।		ब
मोड कट्प-अ.	१. धिवाहक विधि से अन्न इमिलना	ब
मरुप । २. बिलेप कबक अमिलना मंग मोडि मोटि ।		ब
मोड बल्लभ-वि.,	(माधमिक) मोना नामक वा	ब
विमलक इमेडा ए वा मरुप		ब
मोडरी-अ	मरुपक मरुप हे बनेक मरुपही मरुप	ब
मामुल मोट मोटरी ।		ब

[illegible]

मेकहाली बिदे	बाराह बेग उदहाहन ।	प्रयोग-
मेकहाली में के पीपविहारी ।		॥
मेकहाली में कामन स्व विहट बेग ।		॥
मेकहाली काम विहट ।		॥
मेकहाली बिदे फाहवाका ।		॥
मेकहाली बोलक बेग मक नील ।		॥
मेकहाली दमकाय बेग बरका बाबक ।		॥
मेकहाली मिनीनर मदिवा ।		॥
मेकहाली बेग दम के पलक ।		॥
मेकहाली अमनर छोटे बरका ।	प्रयोग-	'कोक' में बेग बुद्धिहार ।
मेकहाली, छोटे बरका में बेग बरका बीपक विहट ।		॥
मेकहाली, मई अनुमान हाथ मिनीनर ।	॥	अमनर
मेकहाली = ॥		॥
मेकहाली, बिदे, कोक, मई, बाबक, मक, मदिवा ।		॥

7

श्री.मं. श्री.शक्ति शाला । श्री
 श्री.शक्तिशाला श्री.शक्तिशाला श्री.शक्तिशाला । श्री

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

समस्त-श्री, श्रीपति सुदय पञ्चक चरित्रादयः सुखानाम्
समस्तः ।

आचार्य-श्री देवनाथ आराधना के आरंभ करें।
समस्त शिष्यों का साथ मिलकर प्रार्थना में

साध-वि., लखनौ विश्व विद्यालय के प्रिन्सिपल केन्द्र परामर्श कम
३५

[illegible]

आइए न कृष्णक प्रत्यक्ष देखें

अथैतन्मन्त्रं पठन्तः सर्वे भूयः ।

२. हाथी एवं गजु ममक भीमस तामकी । जाहोर

बारि-मुल्का, एक बंकेर बारिम रुम्मा ।

१. ४२ प्रयोगाचार्यः भवनः ।

॥१॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

६५३ वाच कवेया (विद्यमानि) । ३. मुख्य वाच

[illegible]

प्राप्त-सं. विभागों व निगम तत्पर करके प्रवर्ति

सामाजिक-विकास, विज्ञान-संशोधन, स्वास्थ्य-संरक्षण, कृषि-संवर्धन

साल-सं. १ वेद भूतिक बाबू देव वर्मा श्रीभाऊदर

[illegible]

३. मोर करेक सेप्टी।

ॐ होत करवाना भोज्य । ॐ तन्मम
 वाक्यः सः कृतः ३३५५ । ॐ

मानव विकास-विश्व, वार्षिक उत्पत्ति मजदूरी पर आधारित सूच-
 ५२।

आत्मनः, १. अति शक्तिशाली २. अति शक्तिशाली
शक्ति ।

कामनिर्णय देखू—'वधवी' । ६
 काम पादक-दि. १ पोर में पोर करत १२. काम

के समान योग व्यक्त । ३. केन्द्रावस्था के लिये दूरा ३८
३१ । $\theta = 1.5 \times 10^{-4}$ मीटर परमाणु ३

कामध-वि. १ कलम जारी वस्तु को समझाएँ ।
२. (सांख्यिक) व्यवसाय । ३. प्रगती (वेत) कोटिः

अथ भक्तिं हन्तुक्यं करणे ।

अन्य प्रकार के बीज	१०
इनमें सबका बीज ।	१०
कुल बीज	१०

	५
श्रीमि सवद मं चन्द्रहाय कान्ध	मी
काविनीपक हा कावाड प्रजात या लोकिता	मे

काशी ५, १. छपित आकाशक तद्वति नामक
महोदय (महोदय) । म. देवता-महोदय-महोदय

(अंशक) ।

[illegible]

३. वाचस्पति, ब्रह्म । ३

बोल । क. (धम्मपिक, पिळ्ळण्ण वाक्क वें केर
विष्णुः ।

बर्तमान- १. क्या नामों पहिल बोनफ कम ।

चण्डो ।

१. श्री. टीक शंकरजी महाराज :—

सामान्य-वि. रसायन विज्ञान शास्त्र के अन्तर्गत
रसायन विज्ञान

काह.म. १ दम्पत्यः । २. पत्नी - "साय" । ३. वी
काह कवच.मि., कमानक द्वि. मन्त्रो दीप कवच

हर्ष भैरव पर कन्यादान	नीतिशेखर पण्डित ।	३
काव्यचिंता, दुष्काळ काव्य	अभिषेकचरण पण्डित ।	३

आज्ञा-६, योगमै र्त्तिमर्क राजा जाह्नवी पत्नी ।
 ६

प्राप्ति-वर्णन. अथवा, यत्, अर्थः । अर्थः—“यत् प्राप्ति-
वर्णनम् ।”

तापक-धन	बहन	उलटा	नै	काम-गम	नै
गान					नै
है-का-विने.	नीक छोटे देवा घर होयन अन्धकार				नै
बस्तु ।					नै
है-का-नै	देव- ¹ (है-नी)				नै
छोटी-नै.	अनक से छठमा बिन पर जन्माक होय				नै
नै	है- ² (है-नी)				नै
छोटीक दूध बल बाबक-नै	(साधनिक) हीन हान्नि				नै
मे पहुँचा देव ।	अपेय- ³ बेसी कम कम करवाते नै				नै
नीक नै	नै- ⁴ (है-नी)				नै
छठमा नै	नै- ⁵ (है-नी)				नै
छाती-नै	का नै- ⁶ (है-नी)				नै
छवि-नै.	१. कर्मिक शुक्ल बटो छवि के सुनै				नै
विशेष	हान्नि नै- ⁷ (है-नी)				नै
अन्ध	है- ⁸ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁹ (है-नी)				नै
नीक	है- ¹⁰ (है-नी)				नै
नीक	है- ¹¹ (है-नी)				नै
नीक	है- ¹² (है-नी)				नै
नीक	है- ¹³ (है-नी)				नै
नीक	है- ¹⁴ (है-नी)				नै
नीक	है- ¹⁵ (है-नी)				नै
नीक	है- ¹⁶ (है-नी)				नै
नीक	है- ¹⁷ (है-नी)				नै
नीक	है- ¹⁸ (है-नी)				नै
नीक	है- ¹⁹ (है-नी)				नै
नीक	है- ²⁰ (है-नी)				नै
नीक	है- ²¹ (है-नी)				नै
नीक	है- ²² (है-नी)				नै
नीक	है- ²³ (है-नी)				नै
नीक	है- ²⁴ (है-नी)				नै
नीक	है- ²⁵ (है-नी)				नै
नीक	है- ²⁶ (है-नी)				नै
नीक	है- ²⁷ (है-नी)				नै
नीक	है- ²⁸ (है-नी)				नै
नीक	है- ²⁹ (है-नी)				नै
नीक	है- ³⁰ (है-नी)				नै
नीक	है- ³¹ (है-नी)				नै
नीक	है- ³² (है-नी)				नै
नीक	है- ³³ (है-नी)				नै
नीक	है- ³⁴ (है-नी)				नै
नीक	है- ³⁵ (है-नी)				नै
नीक	है- ³⁶ (है-नी)				नै
नीक	है- ³⁷ (है-नी)				नै
नीक	है- ³⁸ (है-नी)				नै
नीक	है- ³⁹ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁴⁰ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁴¹ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁴² (है-नी)				नै
नीक	है- ⁴³ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁴⁴ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁴⁵ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁴⁶ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁴⁷ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁴⁸ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁴⁹ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁵⁰ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁵¹ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁵² (है-नी)				नै
नीक	है- ⁵³ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁵⁴ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁵⁵ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁵⁶ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁵⁷ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁵⁸ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁵⁹ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁶⁰ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁶¹ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁶² (है-नी)				नै
नीक	है- ⁶³ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁶⁴ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁶⁵ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁶⁶ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁶⁷ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁶⁸ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁶⁹ (है-नी)				नै
नीक	है- ⁷⁰ (है-नी)				नै</

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

मिलभित्त-१. मनुष्यक शरीर के भीतर कृत्रिम अंगों को लगाने से पहले का क्रियात्मक परीक्षण करना। २. तब तक प्रयोग करना जब तक कि

अन्तर्निहित-तः, परस्पर भीतर के सेवानु में एक ही
वर्ग में वर्गीकृत होना (संभव) ।

प्रतिनिधि-पू. वेरुनक तार भर्का जिसेकीमन सदन
भरुदम तिम पीक जामन बीनमन भास पहावी । नं.

शिविप्रणव-वि., गोवत केत में कोरावि तं श्रीरम
करम ।

लिखितार्थ-कि, वास्तव में ही कुशीमाता दर्जी । श्री
मित्रों-में, कर्नेल कर्नेल श्रीमान् बागलक सिंह । में

सिद्धिद्विहिता-विशेषः, कथं वा विद्वत्पुत्रः सर्वव्यापकः
वाच्यः ।

44

सी.के.सी., पी.वी.ए. काल विद्यालय जयपुर में सेवाक
मूर्ति स्थापित करवाया गया है।

श्रीकृष्ण-पि., कपना दिवस के अवसर पर ।
श्रीकृष्ण-पि., कपना कपना दिवस के अवसर पर

तीर्थेश्वर वेष्टा । ३
 तीर्थेश्वर-वै. शम्भुका वाक्य संग जैवात्मा भास्य । ४

होती-ह, मेरा ही मर्लत कायना मेरी दुली : ॥

10

सुलका-नं. कन्दी कागज जंगूजा बहुत ही शीरि का
बिना पिठारक कच्चा तरकारी ।

मन्मथी सं. १००० वीं मुद्रित मुद्रित कालक कथासु ।

सुख-वि., बी.बी. लिजम । गत होएव ।	मं.
सुखसुख-वि., बी.बी. लिजम । गत होएव ।	मं.

सुकाजो-सं., एक दिनाह्न समकालिक । सं.
सुकाजो-सं., सुकाजो सम । सं.

मुद्राद्वय-विधि, एक दिना तिथि तब जेथ । वै.
 हाथी-द्वे, अस्त्रादी तद्विषय कालक कालक पराकाष्ठा

पौड वीरवार । ११
 विद्यावाचस्पति, पौड कव्यू सं प्रबन्धोप प्रकट

मृत्यु-मिथे, बौद्ध रहता है भक्त्योपजनक । ये,

प्रश्न १. यदि $\sin \theta = \frac{3}{5}$ हो, तो $\cos \theta$ का मान ज्ञात करें।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मुद्रा-पत्रो, मुद्रा-पत्रो हारि कंठकय ममहावासा
मुद्रा ।

मनुष्य-संसार-समस्त ।

मनकी-विषे, बाळक्यासा देहा ।

श्रीमद्भक्त प्रसाद-विशेष, भक्तानां प्रसाद प्राप्तुं वा शक्तिमान्
वैद्य भोज्यः ।

मृन्मसु-वस्त्रा, दुग्धक कनक वस्त्रा, वेदी स्थिति ।
नूपुर को वस्त्रक कनक आदिक स्थिति ।

मनुजना-सं. अत्यन्त किन्नाक मनुजानां राज्य करे-
वावा किन्नावा ।

समस्याओं-३, एके नरे अधिक काम संभव रहना न
रता संसार कष्टमय होने कष्टवा विशेष होत है

अपना पुनर्वसु ही जंगल भीतर सुनसुन गन्ध करे
कन कनकर ।

गुरुकुली धरम-वि. बाइबल, धामद आ धरम
गुरु विवेक सँ धरम मे गुरुगुरु अनुभव होएक । नै.

मु.ना.एच.सि., के.ए. वि. प्रतिष्ठान, अहमदाबाद प्रांत
(अ.प्र.)

[illegible]

भक्ति । २६
 भूतक-३, कार्यकुल भावि मङ्गला के विरीधक कुल

१. शीतलक कालक प्रयोग : २. शीतलक

तला दुबलीक सचक देख : प्रगोथ—'कहिया

हमारे कर्म ही हैं।	१.
प्रकाश-सं. सहसा निवेद्य ।	२.

रुद्रिमा-विजे, केराफ मेड। पत्तार का छोट
रा।
बी.

रबी-स. लौह छोट चट्टानियाँ जारणि । ये.
रबी-स. येन्नाक बाइक या मुँक केरक अमेन ।

रामायण-वि., रवि रवि कं कुलितान् होएन । नं.

मुरी-ब., धार्मिक सामानाक बेव. कारखाना आ
नक बाकेस लीं देहक सिहरन आ मनमनारप । बी.

ସୂଚି-୧, ପରମ୍ପରାକ ମହାକାବ୍ୟ । ୩୩

